P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राष्ट्रीय एकता और शिक्षा

ओम प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टप्पल, अलीगढ़,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

राष्ट्रीय एकता का अर्थ विभिन्न विभेदक तत्वों को समाप्त करना नहीं है। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य राष्ट्र की विभिन्न इकाइयों के एक साथ मिलजुलकर सौहार्दपूर्ण ढंग से राष्ट्रहित में कार्य करना है। सांप्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता, धार्मिकता या भाषायी उन्मादो से अलग हटकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कार्य करना ही राष्ट्रीय एकता है। राष्ट्रीय एकता मोतियों की माला के समान है जो विभिन्न मानको को एक साथ बांधकर रखती है। राष्ट्रीय एकता के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, धार्मिक व नैतिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, सतत शिक्षा इत्यादि राष्ट्रीय एकता की स्थापना में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता, धार्मिकता, राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था, नैतिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के नागरिकों में विविधताओं तथा विभिन्ननताओं का होना स्वाभाविक ही है। संभवतः विश्व में कोई ऐसा राष्ट्र नहीं होगा जहां के समस्त नागरिक एक जैसे हो। नागरिकों में जातीय,धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी या आर्थिक विभिन्नतओं का होना स्वाभाविक ही है। व्यवसाय, व्यापार, धर्म प्रचार या औपनिवेशवाद के फलस्वरुप विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की जनसंख्या में पारस्परिक आदान–प्रदान हुआ है। जनसंख्या में आदान–प्रदान की इस प्रक्रिया के कारण एक ही राष्ट्र में अनेक जातियों, अनेक धर्मों, अनेक भाषाओं या अनेक संस्कृतियों के व्यक्ति रह रहे हैं। भारतवर्ष के संबंध में यह विविधता तथा विभिन्नता और भी अधिक दृष्टिगोचर होती है। जहां यहां पर अनेक धर्मों व जातियों के, अनेक भाषाएं बोलने वाले, अनेक सांस्कृतिक, सांप्रदायिक व आर्थिक पृष्ठभूमि लिए व्यक्ति रहते हैं वहां यहां पर अनेक प्रदेशों में नागरिक विभक्त हैं। सभी नागरिकों को अपने–अपने धर्म व जाति, भाषा, संस्कृति तथा प्रदेश से मोह होना मानव का स्वभाव ही है। परंतु संकुचित मनोवृति तथा निहित स्वार्थों के कारण यहां पारस्परिक कलह तथा दंगे होते रहते हैं। किसी भी राष्ट्र में ऐसी कलह, सांप्रदायिकता, विभिन्नता अत्यंत घातक होते हैं। यह राष्ट्र की उन्नति को ध्वस्त कर सकते हैं। भारत जैसे राष्ट्र के लिए, जो कुछ समय पूर्व स्वतंत्र हुआ है तथा विकास के पथ पर अग्रसर है, जातीयता, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, भाषा या प्रदेशीयता की संकुचित धारणा विशेष रूप से घातक सिद्ध हो सकती है। इससे राष्ट्रीय एकता में बाधा उत्पन्न हो सकती है तथा राष्ट्र की विकास योजनाएं अस्त–व्यस्त हो जाती हैं। राष्ट्र की स्वतंत्रता व अखंडता को बनाए रखने तथा सुख समृद्धि में वृद्धि करने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय एकता व समाकलन को प्रोत्साहित किया जाए। स्वतंत्रता प्राप्ति करने के समय से यह महसूस होने लगा था कि भारत में राष्ट्रीय एकता के विकास की अत्यंत आवश्यकता है। देश की विभिन्न रियासतों का भारतीय शासन में विलय राष्ट्रीय एकता के प्रयासों का शुभारंभ था परंतु सांप्रदायिकता, भाषावाद या क्षेत्रीयताके कारण होने वाले दंगों तथा छोटे–छोटे निहित स्वार्थों के लिए भारत के हितों को नजर अंदाज करने की प्रवृत्ति के कारण राष्ट्रीय एकता आज की प्रमुख आवश्यकता है। संकुचित मनोवृति तथा निहित स्वार्थ वाली सभी विघटन आत्मक प्रवृत्तियों को वांछनीय दिशा देकर राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ– राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय राष्ट्र की सभी इकाइयों–राज्यों, धर्मों, जातियों, संप्रदायों या नागरिकों के साथ मिल–जुलकर राष्ट्र हित में कार्य करने से है। जब राष्ट्र के सभी नागरिक किसी राज्य, धर्म, जाति, संप्रदाय विशेष के हितों को त्याग कर संपूर्ण राष्ट्र के हितों को दृष्टि में रखकर सोचते हैं तथा कार्य करते हैं तब देश में राष्ट्रीय एकता की स्थिति का निर्माण होता है। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के नागरिकों की ऐसी

मानसिक व व्यवहारिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, विश्वासों तथा मान्यताओं को अपने राष्ट्र से जोड़ता है तथा राष्ट्र के प्रति निष्ठा प्रकट करते हुए राष्ट्रीय कल्याण व राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए कार्य करता है। राष्ट्रीय एकता का अर्थ राष्ट्र के विभिन्न तत्वों कोसमाप्त करना नहीं है राष्ट्रीय एकता में एक भाषा,एक धर्म, एक संप्रदाय, एक जाति, एक संस्कृति लाने का कोई प्रस्ताव नहीं होता है। वरन सांप्रदायिकता, धार्मिकता, प्रांतीयता, जातीयताया भाषा संबंधी उन्मादो से मुक्त होकर राष्ट्रीय दृष्टिकोण से कार्य करने की भावना को प्रोत्साहित करना है। राष्ट्रीय एकता की स्थिति में प्रांत, धर्म, संप्रदाय, जाति या भाषा की अपेक्षा राष्ट्र अधिक महत्वपूर्ण होता है तथा व्यक्ति संपूर्ण राष्ट्र के कल्याण के लिए प्रांत, धर्म, संप्रदाय, जाति या भाषा के हित का बलिदान करने के लिए तत्पर रहते हैं। राष्ट्रीय एकता में विभिन्नता एंव विविधताए होते हुए भी एकता का सूत्र होता है जो सभी को बांधे रहता है तथा राष्ट्रीय विकास में सहायक सिद्ध होताहै।

राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य

राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. सभी छात्रों को देश के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान कराया जाए।
2. छात्रों को स्वतंत्रता प्राप्ति से संबंधित बातों से विशेष रूप से परिचित कराया जाए।
3. राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए सभी जातियों संप्रदायों और राज्यों में अधिक मेल उत्पन्न करने वाली पढ़ाई लिखाई को प्रोत्साहित किया जाए।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

शैक्षिक एवं राजनीतिक तत्वों के साकार प्रतिक डॉ राधाकृष्णन ने अपने कथन द्वारा हमारे मानस पटल पर मोटे और गहरे अक्षरों में यह अंकित करने की चेष्टा की है कि यदि हम में राष्ट्र के रूप में जीवित रहने की तनिक भी अभिलाषा है तो हमें राष्ट्रीय एकता की अनिवार्य आवश्यकता स्वीकार करनी पड़ेगी पर क्यों? इसका उत्तर भारतीय इतिहासकारों में अग्रगण्य माने जाने वाले डॉक्टर कानूनगो के शब्दों में सुनिए "भारत की जनसंख्या में असाधारण विविधता है, उसके विभिन्न भागों को एक–दूसरे से पृथक करने वाली दूरियां बहुत लंबी है, उसके निवासियों के दैनिक जीवन एवं व्यवसायको प्रभावित करने वाली जलवायु एवं भौतिक दशाओं में अत्यधिक विभिन्नता है और सर्वोपरि वह अति तीव्र गति से होने वाले आर्थिक, सामाजिक, प्राविधिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के युग में से गुजर रहा है। ऐसे संक्रमण काल में भारतीयों को अत्यधिक सतर्कता से कार्य करना चाहिए वे ऐसा तभी कर सकते हैं जब वे अपने आंतरिक भेदभाव को निश्चित सीमा के अंतर्गत रखें, आवश्यकता पड़ने पर शांतिपूर्ण विधि से उनकी दाहक्रिया करें और साथ सामान्य राष्ट्रीयता की भावना का विकास करें एवं अपने देश के उत्थान के लिए कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करें"। डॉक्टर कानूनगो ने यह भी लिखा है की "राष्ट्रीय एकता की हर देश को हर समय आवश्यकता है किंतु भारत के लिए इसकी कहीं अधिक आवश्यकता है।"

अब निश्चित रूप से वह समय आ गया है जब प्रत्येक भारतीय को अपने अंदर देखना चाहिए और अपने आपसे यह पूछना चाहिए कि वह राष्ट्र के साथ है,या किसी विशिष्ट समूह के यह हमारे समय की चुनौती है,जिसका प्रत्येक नर नारी और बच्चे को सामना करना है।

दुख का विषय है कि गत वर्षों में भारतीयों ने देशहित की ओर से मुंह मोड़ कर अपने संकीर्ण हितों एवं स्वार्थों के प्रति निष्ठावान होने के अनेक प्रमाण दिए हैं। भूमि और जल जैसी छोटी–छोटी बातों पर राज्यों के पारस्परिक कलह, अपने राज्यों के लिए पूर्ण स्वाधीनता की मांग, अपनी भाषाओं के लिए विशेष सम्मान और ऐसी ही कितनी अन्य अनेक बातें उनकी संकीर्णता के प्रमाण हैं और इस बात का भी प्रमाण है कि राष्ट्रीय एकता के मार्ग पर विघटनकारी प्रवृतियां अपना अभियान आरंभ कर चुकी है।

यह सत्य है कि भारत वासियों ने विगत वर्षों में बाहरी संकटों के अवसर पर राष्ट्रीय एकता का परिचय दिया है। किंतु इस एकता की जातीयता, क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता आदि आंतरिक संकटों का सामना करने के लिए भी आवश्यकता है हम बाहरी एवं आंतरिक संकटों का सफलतापूर्वक सामना तभी कर सकते हैं, जब हम राष्ट्रीय एकता की मजबूत जंजीरों में जकड़े हुए हो अतः यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय एकता की जो प्रक्रिया–स्वतंत्रता–संघर्ष के साथ आरंभ हुई थी, उसकी गति को अवरुद्ध करने के बजाय तीव्र बनाया जाए, अपने देशवासियों को सही परामर्श देते हुए डॉ श्रीमाली ने लिखा है– "यदि हम मुश्किल से मिलने वाली अपनी आजादी की सुरक्षा एवं समृद्धि चाहते हैं, तो हमें राष्ट्रीय एकता की प्रक्रिया को जारी रखकर उसे शक्तिशाली बनाना पड़ेगा।"

शिक्षा का योगदान

राष्ट्रीय एकता के विकास में साधारणतः प्रांतीयता, जातिवाद, सांप्रदायिकता, सामाजिक व आर्थिक विषमता, भाषा संबंधी विरोध, विभिन्न राजनीतिक विचारधाराएं जैसे तत्व बाधक होते हैं। यह सभी तत्व राष्ट्रीय एकता को विकसित कर देते हैं। उचित शिक्षा व्यवस्था के द्वारा इन तत्वों के प्रभावों को कम करके राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में प्रयास किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता समिति (1961) ने भी शिक्षा को राष्ट्रीय एकता का एक प्रभावी साधन माना है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में वांछनीय परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है। राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक उचित दृष्टिकोण, विचार, संवेग तथा रूचियो के विकास में शिक्षा का उपयोग किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में ऐसे परिवर्तन लाने होंगे जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने के प्रयत्नों में सहायता मिल सके। इन परिवर्तनों में पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, व प्रशिक्षण संस्थाओं में सुधार प्रमुख है। उपयुक्त पाठ्यक्रम व पाठ्यवस्तु को लागू करके तथा उपयुक्त शिक्षण विधियों को अपनाकर छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास में शिक्षा निम्न ढंग से योगदान कर सकती है––

राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था

राष्ट्रीय एकता को विकसित करने के लिए संपूर्ण देश में एक समान शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए जिससे सभी को एक जैसी शिक्षा प्राप्त करने की समान अवसर प्राप्त हो सके वर्तमान समाज में अनेक प्रकार की शिक्षा व्यवस्थाएं हैं जिनमें शिक्षा की गुणवत्ता में पर्याप्त अंतर है समाज का एक वर्ग उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त करता है जबकि दूसरा वर्ग निम्न गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाध्य होता है इसके अलावा एक तीसरा वर्ग शिक्षा प्राप्ति के अवसरों से वंचित रह जाता है अतः राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था को विकसित किया जाए जिससे शैक्षिक अवसरों की समानता को समाप्त किया जा सके, शिक्षा के राष्ट्रीय उद्देश्य निर्धारित किए जाने चाहिए जिनमें राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति पर भी पर्याप्त बल दिया जाए।

पाठ्यक्रम

छात्रों में व्यापक दृष्टिकोण, रुचियो, संवेगो के विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षा संस्थानों की सभी शैक्षिक क्रियाओं में राष्ट्रीय एकीकरण की भावना प्रस्फुटित हो। इसके लिए पाठ्यक्रम का पुनर्गठन करके उनमें ऐसी पाठ्यवस्तु सम्मिलित करनी होगी जो राष्ट्रीय एकता पर बल देती हो। इतिहास पढ़ाते समय समान सांस्कृतिक तत्वों पर बल दिया जाना, राष्ट्रीय एकता को विकसित कर सकेगा। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पर भी बल दिया जाना चाहिए। ऐतिहासिक तत्वों को राष्ट्रीय संदर्भ में समझाया जाना चाहिए। भूगोल पढ़ाते समय भौगोलिक परिस्थितियों को राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से व्यक्त करना होगा। नागरिक शास्त्र में नागरिकों के कर्तव्य पर बल दिया जाना चाहिए। अर्थशास्त्र शिक्षण में संपूर्ण राष्ट्र के आर्थिक विकास की महत्ता व उसका राज्यों से संबंध पढ़ाया जाना चाहिए। मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं के अध्ययन का प्रावधान होना चाहिए। इसके लिए त्रिभाषा सूत्र अपनाना होगा। क्योंकि ललित कलाओं की राष्ट्रीय चेतना व राष्ट्रीय एकता में सार्थक भूमिका है, इसलिए ललित कला तथा संगीत, साहित्य, नृत्य, लोकगीत व लोकनृत्य आदि को पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिए। इसके साथ–साथ राष्ट्रीय व सामाजिक सेवा कार्यक्रमों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं

पाठ्य सहगामी क्रियाएं भी राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने तथा राष्ट्रीय एकता बढ़ाने में सहायक हो सकती हैं। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि राष्ट्रीय दिवसों को मनाते समय छात्रों को इनके महत्व को महसूस कराना चाहिए। शिक्षक दिवस, बाल दिवस जैसे नए दिवसो, जिनमें सभी धर्मों, संप्रदायों के लोग सम्मिलित हो, को धूमधाम से मनाया जाना चाहिए। विभिन्न धर्मों के मुख्य–मुख्य मेलों व उत्सवों में सभी धर्मों के लोगों को आने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा इन्हें आनंद व उमंग से मनाया वह देखा जाए। राष्ट्रीय नेताओं के जीवन वृत्त, राष्ट्रीय इमारतों के इतिहास, राष्ट्रीय चिन्ह– जैसे राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय झंडा, राष्ट्रीय पशु आदि का ज्ञान छात्रों को कराया जाना चाहिए। अंतर राज्य प्रतियोगिताओं का आयोजन समय–समय पर कराया जाना चाहिए।अन्य राज्यके निर्माण के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए।

धार्मिक व नैतिक शिक्षा

राष्ट्रीय एकता के लिए नागरिकों में धार्मिक सहिष्णुता तथा नैतिकता का होना आवश्यक है। अतः सभी शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक व नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे छात्रों में धार्मिक सहिष्णुता व नैतिकता की भावना उत्पन्न हो सके। सभी धर्मों का अध्ययन तथा नैतिक मूल्यों के विकास को धार्मिक व नैतिक शिक्षा से सम्मिलित करना चाहिए।

प्रौढ़शिक्षा

प्रौढ़ नागरिकों में राष्ट्रीय चेतना व राष्ट्रीय कल्याण की भावना तथा राष्ट्रीय हित में छोटे–छोटे निहित के त्याग का संकल्प उत्पन्न करने के लिए प्रोढ शिक्षा कार्यक्रमों का उपयोग किया जाना चाहिए। प्रोढो को साक्षर बनाकर तथा संचार साधनों जैसे रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र आदि की सहायता से पौधों में राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित की जा सकती है।

अध्यापक

राष्ट्रीय एकता का कोई भी शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षकों के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अभाव में सफल नहीं हो सकता है। अध्यापकों के व्यवहार में राष्ट्रीय भावना परिलक्षित होनी चाहिए। उन्हें राष्ट्रीय एकता में विश्वास तथा आस्था होने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता विकास की विविध विधाओं में भी निपुण होना चाहिए। उन्हें राष्ट्र की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक व आर्थिक पृष्ठभूमि का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं को अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में आवश्यक परिवर्तन करने चाहिए।

वास्तव में, राष्ट्र, राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय एकता तीनों एक ही वृक्ष की ऐसी शाखाएं हैं जो एक दूसरे पर आश्रित हैं परंतु अंतिम अर्थात राष्ट्रीय एकता के अभाव में प्रथम दो अर्थात राष्ट्र व राष्ट्रीयता कभी भी अपना अस्तित्व खो सकती है। राष्ट्र की सुरक्षा, गरिमा व समृद्धि हेतु राष्ट्रीय एकता का विशेष महत्व है। जिस प्रकार किसी माता के लिए इससे बढ़कर सुखदायक कोई वस्तु नहीं हो सकती है कि उसकी संतान हिल–मिलकर हंसी खुशी से रहें व समृद्ध हो, ठीक उसी प्रकार किसी राष्ट्र के लिए सबसे सुखद बात यही है कि उसके समस्त नागरिक मिल–जुलकर रहे तथा समृद्ध हो। इस दृष्टि से राष्ट्र के अस्तित्व के लिए नागरिकों में राष्ट्रीय एकता का होना अनिवार्य है। भारत वासियों के लिए राष्ट्रीय एकता एक चुनौती है तथा इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित है तथा राष्ट्र का तथा राष्ट्र के नागरिकों का विकास व सुख–वैभव राष्ट्रीय एकता पर निर्भर करता है।"विविधता में एकता" ही हमारे जीवन का मूल मंत्र होना चाहिए। समस्त भारत के नागरिकों को धर्म, जाति, संप्रदाय को ध्यान में रखें बिना, एक दूसरे से मानसिक तारतमय स्थापित करना चाहिए तथा राष्ट्रीय उत्थान के आदर्श को सामने रखकर कार्य करना चाहिए। सभी अंतरोंको भूलकर भाई–चारे की

भावना से कार्य करना, सभी धर्मों के विचारों का आदर करना, सभी संप्रदायों के लोगों का सम्मान करना तथा राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में अधिकतम योगदान करना, राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में अत्यधिक सहायक होंगे। शिक्षा कार्यक्रमों में वांछनीय परिवर्तन करके इन सभी लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष

हमें अपने देश को सबल बनाना और उसको सुरक्षित रखना, अपना सर्व प्रथम कर्तव्य समझना चाहिए यदि हम अपने समूह, अपने राज्य, अपनी भाषा या अपनी जाति के समान किसी अन्य बात को महत्व देंगे और अपने देश को भूल जाएंगे, तो हमारा विनाश अवश्य भावी है। इन सब बातों का हमारे जीवन में उचित स्थान होना चाहिए पर यदि हम इनको अपने देश से अधिक महत्व देंगे, तो राष्ट्र के रूप में हमारा अन्त सुनिश्चित है। शिक्षा के दृष्टिकोण को व्यापक करने, एकता की भावना व राष्ट्रीयता तथा आत्मत्याग सहन शीलता की भावना को बढ़ाने का कार्य करना चाहिए जिससे देश के व्यापक हितों के सामने निहित व्यक्तिगत हितों का त्याग किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्निहोत्री रविंद्र– भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्यायें दिल्ली, रिसर्च पब्लिकेशंस।

अदावल, एस.बी.तथा एम. उनियाल– भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा प्रवृतियां, लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।

पांडेय, राम शक्ल –भारतीय शिक्षा की समस्याएं, आगरा– लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।

मलैया, विद्यावती – भारतीय शिक्षा की समस्याएं और प्रवृतियां, दिल्ली रूमैक मिलन कम्पनी ऑफ इंडिया।

सिंघल, महेश चंद – भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएं, जयपुर– राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

गुप्ता, एस.पी.– भारतीय शिक्षा का विकास तथा समस्याएं 11, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद – 2, शारदा पुस्तक भवन।

मिस्र 'मराल' गार्गीशरण – शिक्षा की समस्याएं और समाधान, कानपुर विकास प्रकाशन।

चौबे, सरयू प्रसाद – भारत में शिक्षा का विकास, इलाहाबाद सेंट्रल बुक डिपो।

माथुर , वी.एस. – स्टडीज इन इंडियन एजुकेशन, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।